# दक्षिण गुजरात में व्यावसायिक धर्मांतरण: प्रवासी गन्ना मजदूरों का सामाजिक-धार्मिक अध्ययन

**आर. त्रिवेदी**
तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन विभाग, डेमोस फाउंडेशन सेंटर फॉर रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज़, शंकरराव किर्लोस्कर मार्ग, एरंडवणे, पुणे।

## सारांश

दक्षिण गुजरात के गन्ना उत्पादन क्षेत्रों में हर वर्ष बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर महाराष्ट्र, डांग, तापी और वलसाड जैसे आदिवासी क्षेत्रों से रोजगार की तलाश में आते हैं। ये मजदूर आर्थिक रूप से कमजोर, सामाजिक रूप से हाशिये पर और शैक्षिक रूप से पिछड़े होते हैं, जिसके कारण वे विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभावों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य दक्षिण गुजरात में गन्ना कटाई कार्य में लगे प्रवासी मजदूरों के बीच होने वाले व्यावसायिक धर्मांतरण (Occupational Evangelization) की प्रक्रिया, उसके कारणों, तरीकों और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना है। यह अध्ययन 400 प्रवासी मजदूरों पर आधारित सर्वेक्षण के आंकड़ों पर आधारित है, जो दक्षिण गुजरात की 18 गन्ना मंडलियों में कार्यरत थे। अध्ययन से पता चलता है कि लगभग 98% मजदूर अस्थायी प्रवासी मजदूर हैं जो परिवार सहित काम के लिए आते हैं। प्रवास के दौरान वे अपने मूल सामाजिक और धार्मिक वातावरण से कट जाते हैं, जिसके कारण उनकी सांस्कृतिक पहचान कमजोर होने लगती है। सर्वेक्षण में पाया गया कि लगभग 50% मजदूरों ने स्वीकार किया कि वे अपने त्योहारों, परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों से दूर होते जा रहे हैं, जबकि लगभग 30% मजदूरों ने माना कि आर्थिक दबाव, सामाजिक प्रभाव और सहायता के बदले धार्मिक परिवर्तन का दबाव महसूस किया गया। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आर्थिक सहायता और सामाजिक सहयोग के माध्यम से धीरे-धीरे धार्मिक प्रभाव स्थापित किया जाता है। बच्चों के लिए अस्थायी स्कूल, महिलाओं के लिए प्रार्थना समूह, मुफ्त दवाइयाँ, कपड़े और आर्थिक सहायता जैसी गतिविधियाँ इस प्रक्रिया का हिस्सा होती हैं। इस प्रकार धर्मांतरण प्रत्यक्ष रूप से नहीं बल्कि सामाजिक संबंधों और आर्थिक निर्भरता के माध्यम से धीरे-धीरे होता है। इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यावसायिक धर्मांतरण केवल धार्मिक मुद्दा नहीं है, बल्कि यह आर्थिक असमानता, प्रवासन, शिक्षा की कमी, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक अलगाव से जुड़ा हुआ एक जटिल सामाजिक-आर्थिक मुद्दा है। यदि आदिवासी और प्रवासी समुदायों को आर्थिक रूप से सशक्त, शैक्षिक रूप से सक्षम और सांस्कृतिक रूप से जागरूक बनाया जाए, तो इस प्रकार के धर्मांतरण को रोका जा सकता है। यह शोध दक्षिण गुजरात के संदर्भ में व्यावसायिक धर्मांतरण को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है और यह नीति निर्माताओं, समाजसेवियों और शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करता है।

**मुख्य शब्द:** व्यावसायिक धर्मांतरण, दक्षिण गुजरात, प्रवासी मजदूर, गन्ना मजदूर, धार्मिक परिवर्तन, आदिवासी समाज, सांस्कृतिक परिवर्तन, आर्थिक शोषण, प्रवासन, सामाजिक परिवर्तन

### परिचय

भारत में आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के बीच प्रवासन एक सामान्य सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया है। विशेष रूप से दक्षिण गुजरात के गन्ना उत्पादन क्षेत्रों में हर वर्ष हजारों मजदूर महाराष्ट्र और गुजरात के आदिवासी जिलों से काम की तलाश में आते हैं। इन मजदूरों का प्रवासन मुख्य रूप से आर्थिक कारणों से होता है, जैसे कि खेती का अभाव, वर्षा पर निर्भर कृषि, रोजगार के अवसरों की कमी और गरीबी।

जब ये मजदूर अपने गांव से दूर दूसरे क्षेत्र में काम करने जाते हैं, तो वे केवल स्थान परिवर्तन नहीं करते, बल्कि वे अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक वातावरण से भी अलग हो जाते हैं। इस स्थिति में वे नए सामाजिक समूहों, नई संस्कृति और नए धार्मिक प्रभावों के संपर्क में आते हैं। यही वह परिस्थिति है जिसमें व्यावसायिक धर्मांतरण की प्रक्रिया शुरू होती है।

व्यावसायिक धर्मांतरण का अर्थ है – रोजगार, आर्थिक सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा या सामाजिक सहयोग के माध्यम से किसी व्यक्ति या समुदाय को धीरे-धीरे धार्मिक रूप से प्रभावित करना और अंततः धर्म परिवर्तन की ओर ले जाना। यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से नहीं बल्कि सामाजिक संबंधों, सहायता और आर्थिक निर्भरता के माध्यम से होती है।

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य दक्षिण गुजरात के गन्ना कटाई क्षेत्रों में कार्यरत प्रवासी मजदूरों के जीवन, प्रवासन प्रक्रिया, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों तथा व्यावसायिक धर्मांतरण की प्रक्रिया का समग्र अध्ययन करना है। विशेष रूप से यह अध्ययन प्रवासी गन्ना मजदूरों के प्रवासन पैटर्न को समझने पर केंद्रित है, जिसमें यह देखा गया है कि मजदूर किन क्षेत्रों से आते हैं, कितने समय के लिए प्रवास करते हैं, परिवार सहित आते हैं या अकेले, और प्रवासन उनके जीवन और सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित करता है। प्रवासन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है, इसलिए इस शोध का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि प्रवास के कारण मजदूरों के सामाजिक संबंधों, पारिवारिक जीवन, त्योहारों, परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों में किस प्रकार परिवर्तन हो रहा है।

इस शोध का तीसरा उद्देश्य व्यावसायिक धर्मांतरण के तरीकों को समझना है। इसमें यह अध्ययन किया गया है कि रोजगार, आर्थिक सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, सामाजिक सहायता और व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से किस प्रकार धीरे-धीरे धार्मिक प्रभाव स्थापित किया जाता है। यह प्रक्रिया प्रत्यक्ष धर्म प्रचार के बजाय सामाजिक संबंधों और सहायता के माध्यम से किस प्रकार कार्य करती है, इसका विश्लेषण भी इस अध्ययन का महत्वपूर्ण भाग है। इसके अतिरिक्त, इस शोध का एक प्रमुख उद्देश्य इन सभी प्रक्रियाओं के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों और युवा पीढ़ी पर इसके प्रभाव को समझना। इस प्रकार यह शोध प्रवासन, सामाजिक परिवर्तन और व्यावसायिक धर्मांतरण के बीच संबंध को समझने का एक प्रयास है, जिससे इस विषय पर एक समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके।

**साहित्य समीक्षा**

भारत में धर्मांतरण, विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के संदर्भ में, एक जटिल और बहुआयामी विषय रहा है, जिस पर विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। यह केवल धार्मिक परिवर्तन का प्रश्न नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना, आर्थिक असमानता, सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक हस्तक्षेप से जुड़ा हुआ एक गहन अध्ययन का क्षेत्र है। दक्षिण गुजरात जैसे क्षेत्रों में, जहाँ आदिवासी समुदायों का प्रभुत्व है और आर्थिक संसाधनों की कमी है, वहां धर्मांतरण की प्रक्रिया को समझने के लिए पूर्ववर्ती साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

प्रारंभिक अध्ययनों में यह देखा गया कि आदिवासी समाज ऐतिहासिक रूप से मुख्यधारा के सामाजिक-आर्थिक विकास से वंचित रहा है। Walter Fernandes (2013) के अनुसार, आदिवासी क्षेत्रों में गरीबी, भूमि से विस्थापन और सामाजिक उपेक्षा ने एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न की है जिसमें बाहरी हस्तक्षेप, विशेषकर धार्मिक संगठनों द्वारा, आसानी से प्रभाव स्थापित कर सकता है। उनके अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि जब राज्य की कल्याणकारी योजनाएँ इन समुदायों तक प्रभावी रूप से नहीं पहुँच पातीं, तब गैर-सरकारी और मिशनरी संस्थाएँ उस खाली स्थान को भरने लगती हैं। इस प्रक्रिया में धार्मिक परिवर्तन

अक्सर एक ''सामाजिक समर्थन प्रणाली'' के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो धीरे-धीरे सांस्कृतिक परिवर्तन में परिवर्तित हो जाता है।

इसी संदर्भ में R. Trivedi (2024) ने अपने अध्ययन में यह तर्क दिया है कि दक्षिण गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों में धार्मिक परिवर्तन को केवल आस्था का विषय मानना एक अधूरा दृष्टिकोण है। उनके अनुसार, यह एक संरचित सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और सामाजिक सुरक्षा जैसे तत्वों का उपयोग करके धीरे-धीरे धार्मिक प्रभाव स्थापित किया जाता है। वे बताते हैं कि जब व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संघर्ष कर रहा होता है, तब वह उन संस्थाओं के प्रति अधिक आकर्षित होता है जो उसे तत्काल सहायता प्रदान करती हैं, भले ही उस सहायता के पीछे कोई वैचारिक उद्देश्य निहित हो।

R. Trivedi (2025) के एक अन्य अध्ययन में ''व्यावसायिक धर्मांतरण'' की अवधारणा को और अधिक स्पष्ट किया गया है। उन्होंने यह दर्शाया कि कार्यस्थल, विशेष रूप से ऐसे स्थान जहाँ श्रमिक अस्थायी रूप से निवास करते हैं, धर्मांतरण के लिए अत्यंत अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं। गन्ना कटाई, निर्माण कार्य और घरेलू श्रम जैसे क्षेत्रों में कार्यरत प्रवासी मजदूर अपने सामाजिक नेटवर्क से कट जाते हैं और एक नए सामाजिक ढांचे में प्रवेश करते हैं। इस नए वातावरण में, वे उन व्यक्तियों और संस्थाओं पर निर्भर हो जाते हैं जो उन्हें सहायता प्रदान करते हैं, और यही निर्भरता धीरे-धीरे धार्मिक प्रभाव का माध्यम बन जाती है।

M. Raghavan (2018) ने अपने शोध में प्रवासी श्रमिकों के संदर्भ में ''सामाजिक अलगाव'' (Social Isolation) को धर्मांतरण का एक प्रमुख कारक बताया है। उनके अनुसार, जब व्यक्ति अपने मूल समुदाय से अलग हो जाता है, तो उसकी सांस्कृतिक पहचान कमजोर होने लगती है। इस स्थिति में वह नए सामाजिक संबंधों को अपनाने के लिए अधिक खुला हो जाता है। राघवन यह भी बताते हैं कि धर्मांतरण की प्रक्रिया अक्सर प्रत्यक्ष उपदेश के माध्यम से नहीं होती, बल्कि यह दीर्घकालिक सामाजिक संपर्क, विश्वास निर्माण और भावनात्मक समर्थन के माध्यम से होती है।

इसी प्रकार P. Joshi और A. Mehta (2021) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि धर्मांतरण की प्रक्रिया में लिंग (Gender) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उनके अनुसार, महिलाओं को विशेष रूप से लक्षित किया जाता है क्योंकि वे परिवार की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं की संरक्षक होती हैं। जब महिलाएँ किसी नए धार्मिक प्रभाव को स्वीकार करती हैं, तो उसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। उनके अध्ययन में यह भी बताया गया कि महिलाओं के लिए बनाए गए प्रार्थना समूह, स्वास्थ्य शिविर और स्वयं सहायता समूह (Self-help groups) धर्मांतरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

R. Anand (2019) ने भाषा और संस्कृति के संबंध पर अपने अध्ययन में यह तर्क दिया है कि जब किसी समुदाय की भाषा कमजोर होती है या उसका उपयोग कम हो जाता है, तो उसकी सांस्कृतिक पहचान भी कमजोर होने लगती है। प्रवासी मजदूरों के संदर्भ में यह स्थिति और अधिक गंभीर हो जाती है, क्योंकि वे अपने मूल भाषा और बोली से दूर हो जाते हैं और नई भाषा में संवाद करने के लिए मजबूर होते हैं। इस प्रक्रिया में वे अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण माध्यम को खो देते हैं, जिससे बाहरी सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभावों के लिए रास्ता खुल जाता है।

S. Shah और R. Patel (2016) ने यह विश्लेषण किया कि विकास और धर्म के बीच का संबंध आदिवासी क्षेत्रों में कैसे कार्य करता है। उनके अनुसार, जब विकास कार्यों को धार्मिक संगठनों द्वारा संचालित किया जाता है, तो वे केवल सेवा

प्रदान करने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे एक वैचारिक ढांचा भी प्रस्तुत करते हैं, जो धीरे-धीरे समुदाय के विचारों और विश्वासों को प्रभावित करता है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से उन क्षेत्रों में प्रभावी होती है जहाँ सरकारी हस्तक्षेप सीमित होता है।

N. Tiwari (2020) ने अपने अध्ययन में शिक्षा को धर्मांतरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बताया है। उन्होंने यह पाया कि अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों और मिशनरी स्कूलों के माध्यम से बच्चों को न केवल शैक्षणिक ज्ञान दिया जाता है, बल्कि उन्हें एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से भी परिचित कराया जाता है। चूंकि बच्चे आसानी से प्रभावित होते हैं, इसलिए यह प्रक्रिया दीर्घकालिक सांस्कृतिक परिवर्तन का आधार बन जाती है।

इन सभी अध्ययनों का समेकित विश्लेषण यह दर्शाता है कि धर्मांतरण की प्रक्रिया बहुस्तरीय होती है और इसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक सभी तत्व शामिल होते हैं। विशेष रूप से प्रवासी मजदूरों के संदर्भ में, यह प्रक्रिया और अधिक जटिल हो जाती है क्योंकि वे एक अस्थायी और असुरक्षित वातावरण में रहते हैं, जहाँ उनकी पहचान, सुरक्षा और सामाजिक समर्थन सभी कमजोर होते हैं।

हालांकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययन व्यापक स्तर पर किए गए हैं और उनमें स्थानीय स्तर के अनुभवों का अभाव है। दक्षिण गुजरात के गन्ना मजदूरों के संदर्भ में विशेष रूप से व्यावसायिक धर्मांतरण पर आधारित अध्ययन बहुत सीमित हैं। यही वह अंतर है जिसे यह वर्तमान शोध भरने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, बल्कि प्रत्यक्ष सर्वेक्षण और अनुभवजन्य डेटा के माध्यम से इस विषय को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

## 3. अनुसंधान पद्धति

इस शोध का उद्देश्य दक्षिण गुजरात में गन्ना कटाई कार्य में लगे प्रवासी मजदूरों के बीच व्यावसायिक धर्मांतरण (Occupational Evangelization) की प्रक्रिया, उसके कारणों और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस अध्ययन में गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों प्रकार की अनुसंधान पद्धतियों का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन मुख्यतः क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार, समूह चर्चा और क्षेत्र अवलोकन पर आधारित है, जिससे प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले गए हैं। इस शोध के लिए अध्ययन क्षेत्र दक्षिण गुजरात का वह क्षेत्र चुना गया जहाँ गन्ना कटाई के लिए बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर महाराष्ट्र तथा गुजरात के आदिवासी जिलों जैसे डांग, तापी और वलसाड से आते हैं। विशेष रूप से नवसारी विभाग की 18 गन्ना मंडलियों में कार्यरत मजदूरों को अध्ययन के लिए चुना गया। यह क्षेत्र इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ प्रवासी मजदूर लंबे समय तक अस्थायी रूप से निवास करते हैं और स्थानीय सामाजिक संरचना से अलग रहते हैं, जिससे उनके जीवन में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवर्तन की संभावना अधिक होती है।

इस अध्ययन के लिए कुल 400 प्रवासी मजदूरों का चयन किया गया। उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति (Purposive Sampling Method) के आधार पर किया गया, ताकि अध्ययन में उन मजदूरों को शामिल किया जा सके जो वास्तव में प्रवासी श्रमिक हैं और लंबे समय तक गन्ना कटाई कार्य में संलग्न रहते हैं। अध्ययन में पुरुष और महिला दोनों प्रकार के मजदूरों को शामिल किया गया, क्योंकि सामाजिक और धार्मिक प्रभाव दोनों पर अलग-अलग तरीके से पड़ते हैं। अध्ययन में शामिल मजदूरों की आयु सामान्यतः 18 वर्ष से 60 वर्ष के बीच थी, और उनमें से अधिकांश मजदूर परिवार सहित प्रवास करते थे, जिसमें महिलाएँ और बच्चे भी शामिल थे। डेटा संग्रह के लिए मुख्य रूप से प्रश्नावली

(Questionnaire Method), व्यक्तिगत साक्षात्कार (Personal Interview), समूह चर्चा (Focus Group Discussion) और प्रत्यक्ष क्षेत्र अवलोकन (Field Observation) का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में प्रवासन, आर्थिक स्थिति, शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों, धार्मिक गतिविधियों, सामाजिक संबंधों और धर्म परिवर्तन से संबंधित प्रश्न शामिल किए गए थे। व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से मजदूरों के व्यक्तिगत अनुभव, सामाजिक दबाव, धार्मिक प्रभाव और उनके जीवन में आए परिवर्तनों को समझने का प्रयास किया गया। समूह चर्चा के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि प्रवासी मजदूर सामूहिक रूप से किन समस्याओं का सामना करते हैं और उनके सामाजिक जीवन में क्या परिवर्तन हो रहे हैं। क्षेत्र अवलोकन के माध्यम से मजदूरों के रहने की स्थिति, सामाजिक वातावरण, बच्चों की शिक्षा की स्थिति, धार्मिक गतिविधियों और सामाजिक संगठनों की गतिविधियों का प्रत्यक्ष अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन में प्रवासन के प्रकार, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन, धार्मिक प्रभाव, शिक्षा की उपलब्धता, सामाजिक संपर्क, आर्थिक निर्भरता और धर्म परिवर्तन से संबंधित दबाव जैसे विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया। विशेष रूप से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या मजदूरों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा या सामाजिक सहायता के माध्यम से धार्मिक रूप से प्रभावित किया जाता है और क्या उनके सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन हो रहा है। डेटा विश्लेषण के लिए वर्णनात्मक विश्लेषण पद्धति (Descriptive Analysis Method) का उपयोग किया गया। सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों को प्रतिशत और अनुपात के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि साक्षात्कार और समूह चर्चा से प्राप्त गुणात्मक जानकारी का विषयानुसार विश्लेषण किया गया। इस प्रकार मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के डेटा को मिलाकर अध्ययन के निष्कर्ष निकाले गए, जिससे अध्ययन अधिक विश्वसनीय और वास्तविक स्थिति के निकट हो सके।

अनुसंधान के दौरान नैतिक पक्षों (Ethical Considerations) का भी विशेष ध्यान रखा गया। सभी उत्तरदाताओं को अध्ययन का उद्देश्य बताया गया और उनकी सहमति से ही साक्षात्कार लिया गया। उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत पहचान को गोपनीय रखा गया और प्राप्त जानकारी का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्य के लिए किया गया। इस प्रकार यह अनुसंधान पद्धति क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन और वर्णनात्मक विश्लेषण पर आधारित है, जो दक्षिण गुजरात में प्रवासी गन्ना मजदूरों के बीच व्यावसायिक धर्मांतरण की प्रक्रिया को समझने के लिए एक उपयुक्त और विश्वसनीय आधार प्रदान करती है। यह पद्धति न केवल सांख्यिकीय जानकारी प्रदान करती है, बल्कि मजदूरों के जीवन अनुभव, सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक प्रभावों को भी गहराई से समझने में सहायता करती है, जिससे अध्ययन अधिक व्यापक और समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण बन जाता है।

## विश्लेषण एवं चर्चा

दक्षिण गुजरात के गन्ना कटाई क्षेत्र में कार्यरत प्रवासी मजदूरों पर किए गए सर्वेक्षण और साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रवासन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवर्तन की प्रक्रिया से भी जुड़ा हुआ है। प्रवासी मजदूर अपने मूल गांव, सामाजिक संरचना, धार्मिक संस्थाओं और सांस्कृतिक वातावरण से दूर होकर एक नए सामाजिक वातावरण में प्रवेश करते हैं, जहाँ उनकी पहचान, सामाजिक सुरक्षा और सांस्कृतिक जुड़ाव कमजोर हो जाता है। यही स्थिति उन्हें बाहरी सामाजिक और धार्मिक प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है।

अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश मजदूर अस्थायी प्रवासी हैं, जो वर्ष में लगभग 6 से 8 महीने गन्ना कटाई कार्य में व्यतीत करते हैं। इस अवधि में वे अपने गांव वापस नहीं जा पाते, जिसके कारण वे अपने पारंपरिक त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक कार्यक्रमों में भाग नहीं ले पाते। इससे धीरे-धीरे उनका सांस्कृतिक जुड़ाव कम होने लगता है। कई मजदूरों ने यह

स्वीकार किया कि प्रवास के कारण उनके बच्चों को अपने पारंपरिक त्योहारों, लोककथाओं और धार्मिक परंपराओं की जानकारी नहीं हो पाती।

**परिणाम सारणी**

**Table-1: प्रवासी मजदूरों का मूल क्षेत्र**

| क्रम | क्षेत्र | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| 1 | महाराष्ट्र | 60% |
| 2 | तापी जिला | 20% |
| 3 | डांग जिला | 12% |
| 4 | वलसाड जिला | 7% |
| 5 | अन्य | 1% |

इस Table-1 से स्पष्ट होता है कि अधिकांश प्रवासी मजदूर महाराष्ट्र से आते हैं, जबकि गुजरात के आदिवासी जिले जैसे तापी, डांग और वलसाड से भी बड़ी संख्या में मजदूर आते हैं। इसका अर्थ है कि यह समस्या केवल एक राज्य की नहीं बल्कि अंतर-राज्यीय प्रवासन से जुड़ी हुई है। लगभग सभी मजदूर अस्थायी प्रवासी हैं (graph-1), जो केवल काम के लिए आते हैं और बाद में अपने गांव लौट जाते हैं। अस्थायी प्रवासन के कारण उनका सामाजिक जीवन अस्थिर रहता है।

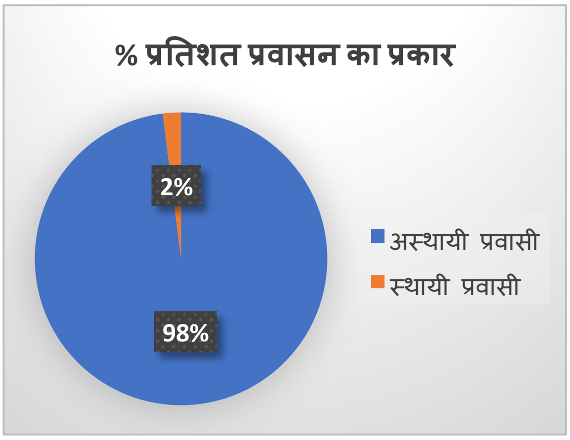


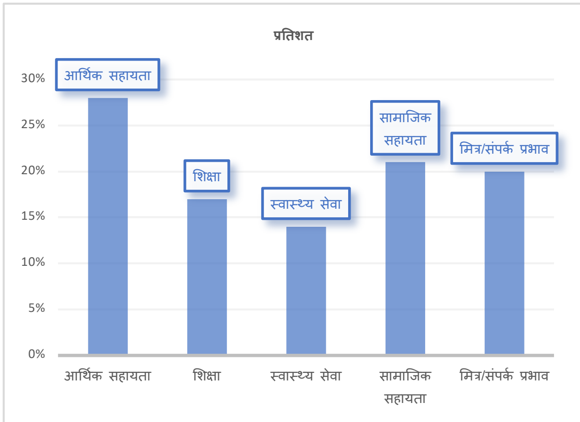


Graph-1: प्रवासन का प्रकार

Graph-2 धर्म परिवर्तन या धार्मिक प्रभाव के कारण

**Table-3: शिक्षा पर प्रभाव**

| Sr. No. | शिक्षा की स्थिति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| 1 | नियमित शिक्षा नहीं | 46% |
| 2 | अस्थायी शिक्षा | 32% |
| 3 | मिशनरी/NGO स्कूल | 22% |

साक्षात्कार के दौरान यह भी सामने आया कि प्रवासी मजदूरों के रहने के स्थान पर शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सहायता की सुविधाएँ बहुत कम होती हैं। इस स्थिति में यदि कोई संस्था उन्हें शिक्षा, दवा, राशन या आर्थिक सहायता प्रदान करती है, तो मजदूर स्वाभाविक रूप से उनके संपर्क में आते हैं। यह संपर्क धीरे-धीरे सामाजिक संबंधों में बदल जाता है और इसी प्रक्रिया

के माध्यम से धार्मिक प्रभाव स्थापित होने लगता है। इस प्रकार धर्मांतरण प्रत्यक्ष रूप से नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक संबंधों के माध्यम से धीरे-धीरे होता है।

अध्ययन में महिलाओं और बच्चों पर इस प्रक्रिया का प्रभाव अधिक पाया गया। महिलाएँ सामाजिक समूहों, स्वास्थ्य शिविरों और सहायता कार्यक्रमों से अधिक जुड़ती हैं, जबकि बच्चे अस्थायी स्कूलों और शिक्षा केंद्रों के माध्यम से बाहरी प्रभावों के संपर्क में आते हैं। जब परिवार की महिला और बच्चे प्रभावित होते हैं, तो धीरे-धीरे पूरे परिवार की सामाजिक और धार्मिक पहचान में परिवर्तन आने लगता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि कई मजदूरों ने धर्म परिवर्तन को स्वेच्छा से नहीं बल्कि आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के कारण स्वीकार किया। कुछ मजदूरों ने बताया कि उन्हें आर्थिक सहायता, बीमारी में मदद, बच्चों की पढ़ाई और संकट के समय सहायता मिली, जिसके कारण वे उन संस्थाओं के प्रति भावनात्मक रूप से जुड़ गए। यह भावनात्मक और आर्थिक निर्भरता धीरे-धीरे धार्मिक परिवर्तन की दिशा में ले जाती है।

**निष्कर्ष**

इस शोध अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि दक्षिण गुजरात के गन्ना उत्पादन क्षेत्रों में कार्यरत प्रवासी मजदूरों के बीच व्यावसायिक धर्मांतरण एक जटिल और बहुआयामी सामाजिक प्रक्रिया के रूप में कार्य कर रहा है। यह प्रक्रिया केवल धार्मिक परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके पीछे आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक अलगाव, सांस्कृतिक विघटन और संस्थागत समर्थन की कमी जैसे अनेक कारक सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। इस अध्ययन ने यह सिद्ध किया है कि जब व्यक्ति या समुदाय अपनी मूलभूत आवश्यकताओं—जैसे भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार—के लिए संघर्ष कर रहा होता है, तब वह बाहरी सहायता और प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है।

दक्षिण गुजरात के संदर्भ में प्रवासी गन्ना मजदूरों का जीवन अत्यंत अस्थायी और असुरक्षित है। वे अपने मूल गांवों से दूर, अस्थायी झोपड़ियों में रहकर लंबे समय तक श्रम करते हैं। इस दौरान वे अपने पारंपरिक सामाजिक ढांचे, धार्मिक संस्थानों और सांस्कृतिक गतिविधियों से कट जाते हैं। यह सामाजिक और सांस्कृतिक अलगाव उनकी पहचान को कमजोर करता है और उन्हें नए सामाजिक संबंधों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। यही वह स्थिति है जहाँ व्यावसायिक धर्मांतरण की प्रक्रिया को एक अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है। इस अध्ययन में प्राप्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि बड़ी संख्या में मजदूरों ने यह स्वीकार किया कि प्रवास के कारण वे अपने त्योहारों, परंपराओं और धार्मिक अनुष्ठानों से दूर होते जा रहे हैं। यह केवल व्यवहारिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह एक गहरे सांस्कृतिक विघटन का संकेत है। जब कोई समुदाय अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर हो जाता है, तो उसकी सामूहिक पहचान कमजोर हो जाती है और वह बाहरी प्रभावों के प्रति अधिक खुला हो जाता है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी और बच्चे इस परिवर्तन से अधिक प्रभावित होते हैं, क्योंकि उन्हें अपने पारंपरिक ज्ञान और मूल्यों का पर्याप्त अनुभव नहीं मिल पाता।

महिलाओं की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण पाई गई है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि महिलाएँ इस प्रक्रिया में एक केंद्रीय कड़ी के रूप में कार्य करती हैं। वे परिवार की सांस्कृतिक परंपराओं की संरक्षक होती हैं और बच्चों के सामाजिक और धार्मिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जब महिलाएँ बाहरी सामाजिक और धार्मिक प्रभावों के संपर्क में आती हैं, तो उनका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। इस प्रकार, महिलाओं को लक्षित करके सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति दी जाती है। अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि धर्मांतरण की प्रक्रिया प्रत्यक्ष और तत्काल नहीं होती, बल्कि यह धीरे-धीरे विकसित होती है। यह प्रक्रिया सामाजिक संबंधों, विश्वास निर्माण और भावनात्मक जुड़ाव के माध्यम से आगे बढ़ती है। जब मजदूरों को आर्थिक सहायता, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा और सामाजिक सहयोग मिलता है, तो वे स्वाभाविक रूप

से उन संस्थाओं के प्रति आकर्षित होते हैं जो यह सहायता प्रदान कर रही हैं। समय के साथ यह आकर्षण विश्वास में बदल जाता है और अंततः धार्मिक परिवर्तन की दिशा में ले जा सकता है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि सभी मजदूर इस प्रक्रिया को बिना प्रतिरोध के स्वीकार नहीं करते। कई मजदूरों ने अपने सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को बनाए रखने की इच्छा व्यक्त की। कुछ क्षेत्रों में स्थानीय सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा प्रयास भी किए जा रहे हैं, जैसे कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक जागरूकता अभियान। ये प्रयास इस बात का संकेत हैं कि समुदाय के भीतर सांस्कृतिक संरक्षण की भावना अभी भी जीवित है, लेकिन इन प्रयासों को और अधिक संगठित और सशक्त बनाने की आवश्यकता है। इस अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक धर्मांतरण की समस्या का समाधान केवल धार्मिक स्तर पर संभव नहीं है। इसके लिए एक समग्र (Holistic) दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी पहलुओं को शामिल किया जाए। सबसे पहले, आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों को बढ़ाना आवश्यक है, ताकि लोगों को मजबूरी में प्रवास न करना पड़े। इसके साथ ही, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना भी आवश्यक है, ताकि समुदाय बाहरी सहायता पर निर्भर न रहे।

प्रवासी मजदूरों के लिए विशेष नीतियाँ भी विकसित की जानी चाहिए। गन्ना कटाई क्षेत्रों में अस्थायी स्कूल, मोबाइल स्वास्थ्य सेवाएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए। इससे मजदूरों और उनके बच्चों को आवश्यक सुविधाएँ मिल सकेंगी और वे अपने सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े रह सकेंगे। इसके अतिरिक्त, स्थानीय भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए भी प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि प्रवासी मजदूर अपनी पहचान को बनाए रख सकें।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि दक्षिण गुजरात में व्यावसायिक धर्मांतरण एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौती है, जिसे समझने और समाधान करने के लिए बहुस्तरीय प्रयासों की आवश्यकता है। यह केवल धर्म का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह मानव गरिमा, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक न्याय का प्रश्न है। यदि समय रहते इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियों में सांस्कृतिक पहचान का ह्रास और अधिक गहरा हो सकता है।

**संदर्भ सूची**


1. Breman, J. (1978). Seasonal migration and co-operative capitalism: The crushing of cane and of labour by the sugar factories of Bardoli, South Gujarat. *Economic and Political Weekly*, 13(6/7), 243–266.
2. Breman, J. (1996). *Footloose labour: Working in the Indian informal economy*. Cambridge University Press.
3. Breman, J. (2010). *Outcast labour in Asia: Circulation and informalization of the workforce at the bottom of the economy*. Oxford University Press.
4. Government of India. (2017). *Report on tribal migration in India*. Ministry of Tribal Affairs, Government of India.
5. Oddie, G. A. (1995). *Missionaries, rebellion and proto-nationalism: James Long of Bengal*. Oxford University Press.
6. Rani, U., & Shylendra, H. S. (2001). Seasonal migration and rural-urban interface in semi-arid tropics of Gujarat. *Journal of Rural Development*, 20(2), 187–217.
7. Robinson, R., & Clarke, S. (2003). *Religious conversion in India: Modes, motivations and meanings*. Oxford University Press.
8. Shah, G. (2004). *Social movements in India: A review of literature*. Sage Publications.
9. Trivedi, R. (2024) 'Churches in Tapi: A Mission on Reforming Adivasi', International Journal of Humanities Social Science and Management, 4(3), pp. 724–730.
10. Trivedi, R (2025). Religious Subversion through Modernization: Analyzing Deep State and Corporate Influence on Evangelical Activities in India, Volume 6, Issue 2, Mar.-Apr, 2025 pp: 300-304 ISSN: 2584-2145

11. Visaria, L., & Joshi, H. (2021). Seasonal sugarcane harvesters of Gujarat: Trapped in a cycle of poverty. *Journal of Social and Economic Development*, 23(1), 113–130.
12. Webster, J. C. B. (1992). *The Dalit Christians: A history*. ISPCK Publications.